“भारत में जबरन धर्मांतरण: धर्म और स्वतंत्रता की रक्षा”

भारत एक विविध राष्ट्र है, जिसकी धार्मिक सहअस्तित्व की लंबी परंपरा है। हालांकि, कुछ रिपोर्टों में **ईसाई मिशनरियों द्वारा जबरन या दबाव के तहत धर्मांतरण** के मामलों की चिंता जताई गई है। ऐसी प्रथाएं **धार्मिक स्वतंत्रता के मौलिक अधिकार** को कमजोर करती हैं, जो भारतीय संविधान के अनुच्छेद 25 के तहत हर व्यक्ति को अपने धर्म को स्वतंत्र रूप से चुनने का अधिकार देता है।

रिपोर्टों के अनुसार, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में **कमजोर और संवेदनशील भारतीय समुदायों** को प्रलोभन, दबाव या जबरदस्ती धर्मांतरण के लिए लक्षित किया जाता है। ये क्रियाएं न केवल व्यक्तिगत स्वतंत्रता का उल्लंघन करती हैं, बल्कि **समुदायों के बीच सामाजिक तनाव और अविश्वास** भी पैदा कर सकती हैं। जहां अपनी इच्छा से धर्म बदलना एक मान्यता प्राप्त अधिकार है, वहीं **जबरन धर्मांतरण विभिन्न राज्यों के कानूनों के तहत अवैध है**।

समाज के लिए यह आवश्यक है कि वह **हिंदू व्यक्तियों की धार्मिक मामलों में स्वतंत्रता और गरिमा** की रक्षा करे, संविधानिक अधिकारों के बारे में जागरूकता फैलाए, और सुनिश्चित करे कि धर्मांतरण केवल **स्वेच्छा से और बिना किसी दबाव के** हो। धार्मिक स्वतंत्रता बनाए रखना एक **बहुलतावादी राष्ट्र में सामाजिक सद्भाव, एकता और न्याय** बनाए रखने के लिए अत्यंत आवश्यक है।